002 सूरह बकरह :-
पेहला रूकू, आयतुल कुरसी, आखरी रूकू.

खुलासा मज़ामीने कुरान उर्दू.| मौलाना मलिक अब्दुर्रउफ साहब.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम.

पेहला रूकू :- ईमान वालो की अच्छी आदते और काफिरो की बुरी आदते.

बे-शक ये अल्लाह की किताब हे, इसलिए अल्लाह से डरने वाले उन इन्सानो पर दुन्या और आखिरत की कामयाबी और खुशकिस्मती के रास्ते खोलने वाली हे, जिन खुशकिस्मत लोगो के अन्दर ये पांच आदते हे-

(1) ज़िन्दा दिल लोग जो गैब पर ईमान रखते हे और कुरआन के हुक्मो के मुताबिक ज़िन्दगी गुजारते हे.

(2) नमाज़ कायम करते हे.

(3) अल्लाह के दिये हुवे माल मेसे खर्च करते हे.

(4) वो उन बातो को भी सच मानते हे जो आपﷺ पर नाजिल हुवा (यानी कुरआन) और उन बातो को भी जो आपसे पेहले नबियो पर नाजिल हुवी.

(5) वो आखिरत पर यकीन रखते हे.

यही लोग हिदायत पर हे और दुन्या और आखिरत की कामयाबीया उन्ही का मुकद्दर हे.

ज़िद्दीपन की वजह से अल्लाह की आखरी हिदायत का इन्कार करने वालो के दिलो पर मुहर लग चुकी होगी, और उन्की आंखो पर ज़िद और बेजा तरफदारी (पक्षपात) के परदे पड गये हे, इन्को समझाना ना समझाना बराबर हे क्यू कि ये लोग किसी तरीके से मान्ने वाले नही हे.

आयतुल कुरसी.{आ/२५५)

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही, वोह हमेशा-हमेशा के लिये ज़िन्दा ए जावेद हे, वोही सारी कायनात को सम्भालने वाला हे, वोह नातो सोये ना उंघे, इसलिये सारी कायनात का मालिक वोही हे, उस्की इजाज़त के बगैर उस्के सामने सिफारिश करने की किसी मे हिम्मत नही, माज़ी (भुतकाल) और मुस्तकबिल (फ्यूचर) का जान्ने वाला वोही हे, और उस्के इल्म को घेरना (जान्ना) किसी के लिये मुम्कीन नही, सिवाय उस्के जिसे वोह खुद चाहे, उस्की हुकूमत ज़मीन व आसमान पर छाई हुई हे, और इन्की निगरानी उसे थकाती नही, और वोह बुलन्द हे और अज़ीम हे.

आखरी रूकू :- सूरह का खत्म और रमज़ान के मज़मून का तकरार.

ये सूरह बकरह का आखरी रूकू हे, सूरह की शुरूआत दीन की बुनयादी तालीमात से की गयी थी, सूरह के खत्म पर भी उन तमाम चीजो का ज़िकर किया जा रहा हे, अल्लाह तआला का इरशाद हे- याद रखो!

आसमान और ज़मीन की हर चीझ का मालिक अल्लाह हे, तुम्हारी कोई खुली हुई या छुपी हुई बात उस्से छुपी हुई नही हे, वह तुम्से हर एक चीझ का हिसाब लेगा, फिर जिसे चाहे माफ करदे और जिसे चाहे सज़ा दे.

रसूल और ईमान वाले अपने रब की तरफ से आई हुई हिदायत पर ईमान रखते हे, उन सब्का अल्लाह पर, फरिश्तो पर, आसमानी किताबो पर, उस्के रसूलो पर ईमान हे, ईमान वाले सब रसूलो को मानते हे, कुछ को मान्ना और कुछ का इन्कार करना उन्की आदत नही हे, उन्का कहना ये हे- हमने हुकुम सुना और फर्माबरदारी की, ए अल्लाह! हम तेरी बख्शीशो के तलबगार हे.

मुसलमानो याद रखो! हर शख्स पर उस्की हेसियत के मुताबिक ज़िम्मेदारी दि-गई हे, जो कोई नेकी कमायेगा तो उस्का अच्छा बदला पायेगा, और जो कोई बुराई करेगा तो उस्की सज़ा भुगतेगा, ईमान वालो! अपने रब से अर्ज़ करो- ए करीम मौला! हमारी भूल चूक पर हमारी पकड ना-फरमा, ए मालिक! हमपर वो बोझ ना डालना जो तूने हम्से पेहले लोगो पर डाले, ए परवरदिगार! हमपर वो बोझ ना रखना जिस्की उठाने कि हम्मे ताकत नही हे, हमे माफ कर दे, हमे बख्श दे, हमपर रहम फरमा, तू ही हमारा मौला हे, काफिरो के मुकाबले मे हमारी मदद फरमा.